# *दोस्ती भगवान से.. ...*

भगवान को अपना दोस्त बना लो यह बात सुनकर मन खुशीयों में नाँच उठा। कैसी होती होगी भगवान की दोस्ती। कहते हैं दोस्ती अर्थात दो सच्चे दिलों का मिलन। मेरा दिल जब दिलवर से मिल जाता है तो दिल को कैसा अनोखा सा प्यार मिलेगा फिर तो दिल मानेगा कि ऐसे प्यारे दोस्त से एक पल भी अलग न होऊं दोस्ती का नाता बहुत ही स्पष्ट और नि:स्वार्थ होता है यों तो परमपिता परमात्मा से हमारे संबंध है परन्तु दोस्ती का नाता मेरे मन को अति भाता है संसार में सभी अपना- अपना दोस्त बनाते हैं परन्तु अगर किसी मनुष्य को सच्चा वफादार और नि:स्वार्थ दोस्त मिल जाये तो उसका भविष्य अति उज्जवल हो जाये परन्तु कलिकाल के अंधकार में ऐसे दोस्त भी लुप्त हो चुके हैं। शिव परमात्मा में एक सच्चे मित्र के सभी गुण विद्यमान हैं। इस संसार में किसी की दोस्ती यदि किसी मंत्री या बडे आदमी से हो तो वह सदा ही निर्भय व निश्चिन्त रहता है सोचता है कि हमें कोई भी बात आयेगी तो मेरा मित्र फलाना मंत्री है सब ठीक हो जायेगा और जिनकी दोस्ती स्वयं भगवान से होती है, सर्व शक्तिमान से हो, उसके लिए इस विश्व में कठिन क्या है किसका डर और किसकी की चिन्ता? भगवान के होते कौन क्या बिगाड सकेगा। उसकी मदद से हम अपनी सभी समस्याओं का पलभर में हल कर सकते हैं। क्या हम सबने नही सुना कि अर्जुन की मित्रता भगवान से हो गयी थी तो अर्जुन की रक्षा होती रही। हम जब यह सुनते थे कि भगवान स्वयं अर्जुन के दोस्त थे तो अर्जुन के भाग्य पर ईर्ष्या होती थी। काश हमारा भी ऐसी ही भाग्य होता परन्तु हमारा भाग्य उससे कम नही.... भगवान ने स्वयं ही आकर हमसे दोस्ती कर ली, वह हमारा सच्चा मित्र, सच्चा रक्षक बन गया है इस परम मित्र की छाया में हमें डर नहीं लगता। भगवान ही ऐसा दोस्त है जो आवश्यकता पडने पर नंगे पैर दौड आता है और हमारी रक्षा करता है। इस बात के अनेक अनुभव हम सबके पास हैं। आवश्यकता इस बात की है हम अपने मित्र के साथ सच्चे व स्पष्ट हों ऐसे हितैषी मित्र से कुछ भी छुपायें नही मैं तो

अपने इस परममित्र से बहुत कुछ खुल चुका हूँ मन की कुछ भी बात उसे कहने में मुझे हिचक नही होती मित्र जो ठहरा वह स्वयं भगवान है तो हम भी तो कुछ कम नही, यहाँ तक शारीरीक व्याधि के निराशात्मक बादल भी जब मुझे घेर लेते हैं तो वह अपना तिक्ष्ण प्रकाश डालकर उन बादलों को विध्वंस कर देता है। मैं अपने मित्र के ऐसे प्यार को कैसे भूल सकता हूँ। मित्र दो होने पर भी एक होता है हम और वह एक हैं मेरी पीडा उसकी पीडा है, मेरी पीडा उसको सहन नही होती। मुझे नाज है कि मेरे जैसा मित्र और किसी को नही है मुझसे ज्यादा वह मुझे प्यार करता है, मुझे चाहता है अब मुझे उसके बिना एक पल भी सुना लगता हैं। वह मेरे दिल में समा चुका है मै भी उसके दिल में समा चुका हूँ। जब तक मैं उससे दो बातें न करूँ मन को चैन नही आती है दिल होता है कि उससे बात करता ही रहूँ ... करता ही रहूं मेरा वह मित्र हजारों वर्षों के बाद मिला है मैं उसे दिल में छुपा कर रखा हूँ मेरा मन उससे बात करते- करते नहीं थकता। सच्चा मित्र वह है जो मित्र को सही मार्गदर्शन दें और भगवान ने इस संबंध में हमसे ज्यादा मित्रता निभाई है उसका उदाहरण सृष्टि में दूसरा नही है। जब हम राह भटक चुके थे, तेजी से गर्त में गिरते जा रहे थे, तब हमे इस परममित्र ने आकर गहरी तंद्रा से जगाया और अपनी पुरानी मित्रता  याद दिलाई और हमें ऐसा एहसास कराया कि सचमुच हम अपनी राह भूले थे इसके लिए कोटी- कोटी हम अपने मित्र के शुक्र गुजार हैं। अगर इस अंधेरे मार्ग में यह सच्चा दोस्त न मिलता तो आज हम कहाँ होते ? विकारों की जहरीली खायी में पडे होते और गंद में दम घोट रहे होते। सच्चा मित्र वो है जो दु:ख बाँट ले और सुख में वृद्धि करें। परन्तु कितने हैं कलियुग में ऐसे मित्र। जबसे हम भगवान से मिले तब से हमारी जीवन बगियां में सुख, शान्ति, आनन्द के फूल खिल गये हैं। क्या कहना ऐसे दोस्ती का जिसकी दोस्ती स्वयं खुदा दोस्त से हो जाये...।

**मानो या न मानो**

बी० के सूर्य

भगवान हमारे अन्दर नही है.....

शान्तचित्त होकर, एकान्त में जाकर अपने से पूछो कि क्या मेरे अन्दर भगवान है? क्या आपका विवेक कहता है कि भगवान मेरे अन्दर है? यदि वह मेरे अन्दर है तो मेरे पास इसका क्या अनुभव है?

सोचो जिसे याद करने से ही मनुष्य का मन शान्त हो जाता है सदि वह शान्ति का सागर स्वयं हमारे अन्दर होता तो हमारे पास कितनी शान्ति होती। परन्तु सबके अन्दर भ्गवान के होते हुए भी सबके मन अत्यन्त अशान्त क्यों हो गये हैं?

जिसके मन्दिरों के भी शान्ति की तरंगें अनुभव होती है, वह यदि हमारे अन्दर ही है तो हमें कितनी शान्ति होनी चाहिए। विचार करें भला भगवान के सर्वत्र होने की आवश्यकता ही क्या है, ये संसार का खेल तो प्रकृति और पुरूष का खेल है आत्मा अपनी शक्ति से जीवन चला रही है। परमात्मा के देह के होने की तो आवश्यकता ही नही वह सर्वत्र होकर करेगा भी क्या... ?

यह रहस्य का आपको ज्ञान हो कि इस संसार को भगवान नही चला रहा है यह तो कुछ नियमों अनुसार आत्माओं के द्वारा चलाया जा रहा है, यदि विश्व का संचालक भगवान होता तो संसार का यह हाल न होता। अब परमआत्मा ने स्वयं घरा पर अवरित होर बताया कि मैं तो ब्रह्मलोक का वासी हूँ मे वहॉ से ही अपना सर्व कार्य कर सकता हूँ। तुमने यह सबसे बडी भूल कर दी जो मुझे सर्वव्यापी कह दिया मै चोर मे, डाकूओ में, अत्याचारी मे, उग्रवादीयों मे या पापीयों मे अन्दर थोडे ही विराजमान हूँ। यह तुमने मेरी ग्लानि की, इसलिए तुम दु:खी हुए।

हम मनुष्य की एक स्वाभाविक अभि व्यक्तित पर ध्यान दें, भगवान का नाम लेते ही सबका ध्यान ऊपर की ओर जाता है क्योंकि वह ऊपर का ही तो रहने वाला है, परमधाम का वासी है, वहीं से वह एक बार इस धरा पर आता है। अद्वैत वाद की यह मूल मान्यता है कि भगवान को संकल्प उठा कि मै एक से अनेक हो जाऊॅ एकोवहं, बहूस्वमी और वह एक भगवान अनेक रूपों में प्रकट हो गया विश्व रचा गया। यही मूल मान्यता है इस सर्वप्यापकता के सिद्धान्त के पीछे परन्तु शंकराचार्य द्वारा

प्रतिपादित यह सिद्धान्त सम्पूर्ण सत्य नही है, परमआत्मा ने स्वयं आकर सृष्टि रचना के रहस्यों को स्पष्ट किया है उसे संकल्प उठा कि नई सृष्टि रचूँ और वह इस महान् कार्य के लिए धरा पर अवतरित हुआ ऐसा नही है कि ये सृष्टि कभी नही थी ये तो अनादि है। वह स्वयं ही एक से अनेक हो गया तो ये भेद क्यों । विद्वान इसका उत्तर देते हैं कि ये भेद भ्रम है, परन्तु है ये उनकी अपना भ्रम सभी देहों मे एक- एक आत्मा है और जो भी आत्माओं मे परम है वही परम आत्मा है और वह सब आत्माओं का परमपिता है अद्वैत मत वाले भगवान को अपना परमपिता नही कह सकते फल स्वरूप अन्हे ईश्वरीय मिलन का सुख भी प्राप्त नही होता।

अब भगवान के द्वारा ही भगवान को जानो और उससे पिता- पुत्र का नाता जोडकर उससे सर्वस्व प्राप्त कर लें यही वो स्वर्ण अवसर है जब हम उसे सम्पूर्ण रूप से जानकर उसके अति समीप आ सकते हैं।

**मानो या न मानो**

बी० के सूर्य

भगवान कण- कण में नही है.....

यह सम्पूर्ण सत्य है, भगवान के यहॉ सर्वत्र होते भी यदि संसार का हाल इतना बुरा है तो उसे कहना चाहिए कि तुम यहॉ से जाओ तुम्हारे होते यहॉ कार्य ठीक नही चल रहा है।

वास्तव में उसकी उपस्थिति यहॉ नही है वैज्ञानिक भी कहते हैं कि प्रत्येक कण में उर्जा है यह परमात्मा की ही उर्जा हैं, हर कण में चार्ज है यह उसी की शक्ति हे परन्तु ऐसा नही है।

इस विश्व में दो शक्यिाँ है , जबकि प्रकृति की शक्ति भौतिक है, कण- कण में दृश्यमान उर्जा भौतिक उर्जा है। यह परमात्म उर्जा नही है यहाँ हमें ईश्वरीय शक्ति, आत्मा की शक्ति व प्रकृति की शक्ति के अन्तर को समझना होगा। यदि कण कण में परमात्म शाक्ति हो तो कण- कण से शान्ति,

प्रेम व पवित्रता की तरंगें चारो ओर फैलनी चाहिए। तो कण- कण में चुम्बकीय शक्ति का होना तो मान्य है परन्तु ईश्वरीय अपस्थिति अमान्य है।

सबके अन्दर भगवान हो तो उसके सर्व गुण सबसे प्रतिभासित हों विद्वान कहते हैं कि माया का पर्दा बीच में होने के करण ईश्वरीय गुणों की अनुभव नही होता यह मान्यता गलत है जब सब जगह है ही वो तो पर्दे का जगह कहॉ से मिली जब है ही एक तो हम और वो और दोनों के बीच में पर्दा ये कहॉ से आया ?

वास्तव में यही अज्ञान का पर्दा है कि भगवान सर्वस्व है, इस पर्दे ने पतन का आह्वान किया है। इस अज्ञान ने ही मनुष्य को परमप्रिय परम आत्मा से दूर रखा है। इस अज्ञान को नष्ट कर दे और प्रभु मिलन की सुख प्राप्त करें। एक ओर कहा जाता है वो हमारे अन्दर ही है, दूसरी ओर भक्तों के दिल में उसके पास जाने की इच्छा, एक ओर सदा मुक्त परमात्मा को भी सर्व देहों में विराजमान मान कर लिया और दूसरी ओर साधक स्वयं मुम्त होकर इस जग से दूर मुक्तिधाम में जाना चाहते हैं वे मानते हैं कि मुक्त अवस्था में वे परमात्मा के समीप उसके सानिध्य में रहना चाहते हैं यदि वो तुम्हारे अन्दर ही है तब तो तुम उसके पास पहले से ही हो, फिर मुक्ति की इच्छा क्यों ?

इसलिए अब इस समय को स्वीकार कर लें कि परमात्मा अति सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है, यदि उसे सर्वप्यापी मानेंगे तो उसके स्वरूप का ज्ञान ही न रहेगा, ओर तब हम उनसे योग युक्त भी नही हो पायेंगे और यही हुआ भी उसे सर्वत्र मानने के कारण कोई भी साधक इससे योग युक्त नही हो पाया परिणामत: किसी को ईश्वरीय शक्तियाँ प्राप्त नही हुई और मनुष्यात्माओं का पतन चालू रहा तो सभी को ज्ञात रहे कि वह हमारा परमपिता है। हम और वो अलग - अलग हैं।

## बातें अपनों से

बी० के सूर्य

हे ब्रह्मा वत्सों.....

निराकार शिव भगवान ने रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ, ब्रह्मा के द्वारा रचकर तुम्हे कहा है- कि अब तुम इस यज्ञ की रक्षा करो, इस यज्ञ की सेवा करो, यज्ञ सेवा से सबको सन्तुष्ट करो तो ये यज्ञ तुम्हे मन इच्छित फल देगा।

क्या तुम्हे एहसास है कि तुम पर भगवान ने विश्वास किया है, यज्ञ की बागडोर तुम्हारे हाथ में सौंपी है असुरों से यज्ञ रक्षा करने के लिए तुम्हे ज्ञान के दिव्य शस्त्र प्रदान किया है तुममे पवित्रता का बल भरा है तुम्हारी पवित्रता ही यज्ञ की रक्षा करती है।

तुम यज्ञ के इस महान कार्य में मै- पन तो नही लाते हो ? क्या तुम तन, मन, धन से इसकी सेवा कर रहे हो इस यज्ञ के द्वारा ही परमपिता को यह संसार बदलना है। तुम्हारे तन, मन और धन व श्रेष्ठ कर्मों की आहुति इस यज्ञ को सफल करेगी।

इस यज्ञ की सेवा करके अनेक मनुष्यात्मायें श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त कर चुकी है सच्चे मन से यज्ञ सेवा करने वालों का बेडा पार हो चुका है। इस यज्ञ सेवा ने अनेंकों के जीवन को निर्मल कर दिया है और अनेक यज्ञ रक्षकों पर स्वयं भगवान प्रसन्न हो चुके हैं।

तुम अपने धर को भी रूद्र का यज्ञ बना दो, तुम अपने जीवन को भी यज्ञ बना दो, यह निश्चय कर लो कि तुम्हारे पस जो कुछ भी है वह प्रभु की है इसकी अमानत है तो तुम्हारी पालना ईश्वरीय यज्ञ से होती रहेगी। तुम सर्व शक्तिवान की छत्रछाया में आ जाओंगे परिवार तुम्हारे लिए बन्धन नही बनेगा जो भी कर्म तुम करोगे उसे यज्ञ सेवा ही माना जायेगा और तुम्हारे भण्डारे सदा -सदा ही भरपूर रहेंगे।

जरा सोचो स्वयं भगवान ने तुम्हे अपना अधिकारी बना लिया है अपना वारिस बना लिया है वह तुम्हारा मार्ग दर्शक साथी भी बन गया है क्या तुम उसके साथ का पूरा लाभ उठा रहे हो या तुम यह भी भूल जाते हो कि भगवान साथी है, तुम्हारी यज्ञ रक्षक बनकर यज्ञ में अपना सर्वस्व स्वाहा करके तुम अलबेले मत बन जाना जो मनुष्य अपने कर्तव्य व जिम्मेदारीयों को भूल जाता है वह कभी सर्वोच्च लक्ष्य को नही पा सकता तुम पर भगवान की नजर है वह तुम्हे कुछ बनाना चाहता है वह तुम्हे विश्व में चमकाना चाहता है उसकी विशुद्ध भावनाओं को पहचानो....

अब ये यज्ञ अतिशीघ्र पूर्ण होने को है। सम्पूर्ण विश्व की आहुति इसमें पड जायेगी और इस धरा पर स्वर्ग उदय होगा तुम अपना सर्वस्व इस यज्ञ में सफल करके जन्म- जन्म के लिए सफलता का वरदान प्राप्त कर लो, यज्ञ सेवा के द्वारा निरंहकारी श्रेष्ठ स्थिति को पा लो, भगवान को राजी करके उसे वरदान ले लो और यज्ञ में अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को स्वाहा करके जीवन को दिव्यता से भरलो।

## बातें अपनों से

बी० के सूर्य

हे भगवान द्वारा सम्पूर्ण विश्व से चुनी हुई भाग्यशाली आत्माओं .....भगवान भाग्य बॉटने के लिए तुम्हारे द्वार पर आया है उसका और तुम्हारा ये अलौकिक मिलन केवल एक बार ही होता है अपने भाग्य को निहारकर परम आनन्द में स्थित हो जाओ।

तुम्हारे लिए ये अमुल्य समय है इसमें तुम जितना चाहे भाग्य बना सकते हो इसलिए अपने इन अनमोल क्षणों को परचिन्तन में नष्ट न करना परचिन्तन तो सारा संसार कर रहा है तुम्हे तो स्वचिन्तन करके स्वयं को आध्यात्म के सर्वोच्च शिखर पर ले जाना है।

क्या तुम अपने महान् कर्तव्यों को जानते हो ? क्या तुम्हे अपनी जिम्मेदारियों का एहसास है ? तुम्हे विश्व में प्रेम की गंगा कहानी है, तुम्हे सबको शान्ति का दान देना है, तुम्हे भक्तों की मनो कामनाएँ पूर्ण करनी है अलबेलेपन की चादर फेंक कर सर्वशक्तिवान से सर्व खजाने लेने में लग जाओ।

तुम्हारा एक- एक स्वॉस हीरे तुल्य है तुम्हारा एक- एक संकल्प विश्व कल्याणकारी है क्या तुम्हे इसका अन्दाजा है ? तुम मास्टर रचयिता हो तुमसे निकली रूहानी तरंगें आत्माओं को नव जीवन प्रदान करने वाली है। इसलिए एक भी संकल्प व्यर्थ या साधारण रूप से न जाने दो।

सारा विश्व तुम्हारी ओर प्यासी नजरों से देख रहा है, भौतिकता में उलझी आत्माएँ अपने लक्ष्य को भूल चुकी हैं, विकारों की दलदल में फंसी मनुष्यात्माएँ अति निर्बल ओर दु:खी हो गई है तुम्हे उनके दु:ख हरने हैं। तुम्हे उन्हें बल देना है इसलिए एकाग्रता पूर्वक सम्पन्न बनाने में लग जाओ।

याद करो तुम भगवान को कब से पुकारते थे तुमने उससे कितने वायदे किये थे अब वह तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करने आया है, कितना सुनदर अवसर है ... कि तुम भगवान से बातें कर सकते हो... तुम उसके दिव्य कर्मों को निहार सकते हो... तुम उससे प्रत्यक्ष में गीता ज्ञान सुन सकते हो... अपने भाग्य को देखकर मुस्कुराओ... तुम जैसा भाग्यवान इस विश्व में और कोइ नही।

जिसने जन्म- जन्म तुम्हारी मनोकामनाएँ पूर्ण की अब वह तुमसे श्रेष्ठ कामनाएँ रखता है। वह तुम्हे सम्पन्न बनाना चाहता है अपने से पूछो नितनी लगन तुम्हे सम्पन्न बनाने की। तुम्हारे परमपिता में है, क्या उतनी ही लगन तुममें भी है? यदि तुम भी उसके समान बनने की लगन लगाओं तो उसकी मदद से तुम्हे देर नही लगेगी तो पहचानो ईश्वरीय मदद को और उसके ईशारों पर कुर्बान हो जाओ।

ओम शान्ति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com